



प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 13 अंक 3

www.csir.res.in

मार्च 2025

डॉ. जितेंद्र सिंह द्वारा सीएसआईआर- सूक्ष्मजीव प्रौद्योगिकी संस्थान के परियोजनाओं की समीक्षा

केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. जितेंद्र सिंह ने हाल ही में सीएसआईआर-सूक्ष्मजीव प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-इमटेक) में माइक्रोब रिपोजिटरी और अन्य सुविधाओं का निरीक्षण किया तथा संस्थान में मौजूदा परियोजनाओं की भी जानकारी ली। इस अवसर पर डॉ. सिंह ने इस बात पर प्रकाश डाला कि सूक्ष्मजीव प्रौद्योगिकी जैव प्रौद्योगिकी का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, तथा उन्होंने अगली पीढ़ी की औद्योगिक क्रांति को आकार देने में इसके बढ़ते महत्व पर बल दिया। डॉ. जितेंद्र सिंह ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को नई बायो-ई-3 नीति के लिए श्रेय दिया, जिसमें बायोमैन्युफैक्चरिंग और बायो फाउंड्री पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित किया गया है। उन्होंने बायोटेक क्षेत्र में भारत की तीव्र प्रगति के बारे में चर्चा करते हुए कहा, "भारत की जैव अर्थव्यवस्था ने 2014 में 10 बिलियन डॉलर से 2024 में 130 बिलियन डॉलर से अधिक की असाधारण वृद्धि देखी है, और 2030 तक 300 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है।"



डॉ. जितेंद्र सिंह ने हाल ही में भारत के पहले स्वदेशी एंटीबायोटिक, नैफिश्रोमाइसिन के लॉन्च को भी याद किया, जिसे प्रतिरोधी संक्रमणों से निपटने के लिए विकसित किया गया है। उन्होंने कहा कि भारत में बायोटेक स्टार्टअप की संख्या 2014 में केवल 50 से बढ़कर आज लगभग 9,000 हो गई है,

जिससे बायोटेक नवाचार के लिए वैश्विक केंद्र के रूप में भारत की स्थिति मजबूत हुई है। इसके अलावा, उन्होंने बताया कि भारत अब जैव-विनिर्माण में एशिया-प्रशांत क्षेत्र में तीसरे और वैश्विक स्तर पर 12वें स्थान पर है, जो माइक्रोबियल जेनेटिक्स, संक्रामक रोगों, किण्वन प्रौद्योगिकी, पर्यावरण



माइक्रोबायोलॉजी और जैव सूचना विज्ञान में अग्रणी अनुसंधान को आगे बढ़ाने में सीएसआईआर-इमैटैक के बढ़ते महत्व को चिन्हित करता है।

माइक्रोबियल बायोटेक्नोलॉजी में एक प्रमुख अनुसंधान संस्थान, सीएसआईआर-इमैटैक, अपने माइक्रोबियल टाइप कल्चर कलेक्शन और जीन बैंक (एमटीसीसी) के माध्यम से 14,000 से अधिक माइक्रोबियल उपभेदों का भंडार रखता है। यह राष्ट्रीय भंडार न केवल अनुसंधानकर्ताओं और उद्योगों को प्रमाणित कल्चर प्रदान करता है, बल्कि माइक्रोब से संबंधित विषयों में आईपीसी, बीआईएस और एनबीए सहित प्रमुख नियामक प्राधिकरणों का भी समर्थन करता है। यह संस्थान वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुप्रयोगों के लिए माइक्रोबियल संसाधनों का दोहन करने में सबसे आगे है, जो स्वास्थ्य सेवा, फार्मास्यूटिकल, कृषि और पर्यावरण विज्ञान में अपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करता है। सीएसआईआर-हिमालय जैवसंसाधन प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-आईएचबीटी), पालमपुर से वर्चुअल तौर पर जुड़ते हुए डॉ. सिंह ने कई नई सुविधाओं का उद्घाटन किया और

महत्वपूर्ण वैज्ञानिक चर्चाओं में भाग लिया। वे बदलते जलवायु में उच्च ऊंचाई वाले पौधों के अनुकूलन पर ईएमबीओ कार्यशाला (एचईपीएसी) और उद्योग, किसान और शिक्षा (आईएफए) बैठक में शामिल हुए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ऐसी पहल वैज्ञानिक उन्नति, आर्थिक सशक्तिकरण और टिकाऊ कृषि के प्रति भारत सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। डॉ. जितेंद्र सिंह ने हिमाचल प्रदेश के पालमपुर में एक नए ट्यूलिप गार्डन का वर्चुअल तौर पर शुभारंभ भी किया। उन्होंने वैज्ञानिक हस्तक्षेप के लिए सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर टीम की सराहना की, जिससे अन्य मौसमों में भी ट्यूलिप की व्यापक खेती संभव हुई है। इस मॉडल को अन्य क्षेत्रों में भी दोहराया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने कृषि क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देने वाले संस्थान द्वारा समर्थित कृषि-स्टार्टअप द्वारा विकसित उत्पादों को भी लॉन्च किया। डॉ. जितेंद्र सिंह ने कई राष्ट्रीय मिशनों का नेतृत्व करने के लिए सीएसआईआर-आईएचबीटी की सराहना की, जिनमें सीएसआईआर फ्लोरीकल्चर मिशन - हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड और लद्दाख के 3,800 किसानों को लाभ पहुंचाने वाले 1,000 हेक्टेयर तक फूलों की

खेती का विस्तार शामिल हैं, इससे 80 करोड़ रुपये की आय हुई।

इसके अलावा इसने अरोमा मिशन, बाजरा मिशन, इम्युनिटी मिशन, वेस्ट टू वेल्थ मिशन, फेनोम इंडिया-सीएसआईआर हेल्थ कोहोर्ट नॉलेजबेस, सीएसआईआर प्रिसिजन एग्रीकल्चर मिशन का भी संचालन किया। डॉ. जितेंद्र सिंह ने ऑटोनोमस ग्रीन हाउस, हींग बीज उत्पादन केंद्र, हींग क्यूपीएम सुविधा, सजावटी बल्ब प्रक्रिया संयंत्र और फाइटो-विश्लेषणात्मक सुविधा सहित अत्याधुनिक संयंत्रों का भी उद्घाटन किया।

इसके अतिरिक्त, उन्होंने फाइटो फैक्ट्री सुविधा की आधारशिला रखी और फ्लोरीकल्चर जंक्शन से चांदपुर आरएंडडी फार्म तक सीमेंट कंक्रीट सड़क का लोकार्पण किया।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने इस बात पर जोर दिया कि वैज्ञानिक अनुसंधान, उद्योग सहयोग और सरकारी नीतियों को एकीकृत करके हिमालयी राज्यों की समृद्ध जैव विविधता का उपयोग आर्थिक समृद्धि के लिए किया जा सकता है, जिससे किसानों को लाभ होगा और भारत के वैज्ञानिक इकोसिस्टम को बढ़ावा मिलेगा।

सीएसआईआर-निस्पर द्वारा विज्ञान के बहुमुखी आयाम पर केन्द्रित भारत-फ्रांस संगोष्ठी का आयोजन

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) ने सीएनआरएस-ओपन रिसर्च डेटा, ओपन साइंस, प्रकाशन, अनुसंधान डेटा और उच्च प्रदर्शन कंप्यूटिंग विभाग, पेरिस (सीएनआरएस- डीडीओआर) के सहयोग से 5-6 मार्च, 2025 को सीएसआईआर-निस्पर के सत्संग विहार परिसर में “ओपन होराइजन्स: इंटीग्रेटिंग ओपन एक्सेस, ओपन डेटा और कम्प्यूटेशनल इनोवेशन पर दो दिवसीय भारत-फ्रांस संगोष्ठी का आयोजन किया।

इस संगोष्ठी का उद्देश्य भारत और फ्रांस के बीच ओपन एक्सेस, ओपन डेटा और ओपन साइंस की दिशा में तथा डिजिटल तकनीक और ओपन सोर्स प्लेटफॉर्म विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए सहयोग को बढ़ावा देने, पारदर्शिता बढ़ाने और विज्ञान और समाज के बीच साझेदारी के लिए उपकरणों का उपयोग करने के लिए सूचना-संचालित दृष्टिकोण को लागू करने में बड़ी संभावनाओं पर विश्लेषण करना था। इस संगोष्ठी में भारत और फ्रांस के शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं ने भाग लिया। इस मंच ने ओपन एक्सेस सूचना साझा करने और नेटवर्किंग के अवसरों के लिए एक अनूठा मंच प्रदान किया।

उद्घाटन सत्र में भारत और फ्रांस के प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया, जिनमें डॉ. एंटोइन पेटिट, अध्यक्ष और सीईओ, सीएनआरएस, फ्रांस; प्रो. रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर; प्रो. नितिन सेठ,



निदेशक, सीईएफआईपीआरए; डॉ. श्रीनिवास रेड्डी, निदेशक, सीएसआईआर-आईआईसीटी मंच पर उपस्थित थे।

इस अवसर पर प्रो. रंजना अग्रवाल ने अपने सम्बोधन में कहा कि हम सीएनआरएस, फ्रांस के साथ मिलकर इस संगोष्ठी का आयोजन करके बहुत खुश हैं, ताकि मुक्त विज्ञान और अनुसंधान डेटा साझाकरण को बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने कार्यक्रम की प्रासंगिकता के बारे में बताते हुए कहा, "यह संगोष्ठी अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने और समाज के सभी वर्गों के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान को साझा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने भारत सरकार की "एक राष्ट्र एक सदस्यता" पहल और बड़ी संख्या में हितधारकों को खुली पहुँच प्रदान करने में इसकी भूमिका का भी उल्लेख किया।

तत्पश्चात प्रो. नितिन सेठ, निदेशक, इंडो-फ्रेंच सेंटर फॉर द प्रमोशन ऑफ एडवांस्ड रिसर्च (सीईएफआईपीआरए) ने इस अवसर पर अपने भाषण में बताया कि उन्होंने सालाना 1-2 कॉल से शुरुआत की और अब दोनों

देशों के बीच विज्ञान और प्रौद्योगिकी में कई समर्पित साझेदारियां हैं। उन्होंने इस संगोष्ठी से अपेक्षाओं के बारे में भी अपने विचार साझा किए। सीएसआईआर-आईआईसीटी के निदेशक डॉ. श्रीनिवास रेड्डी ने उद्घाटन सत्र में अपने विचार साझा करते हुए कहा कि ओपन एक्सेस ने वैज्ञानिक ज्ञान को सुलभ बना दिया है, यह बहुत सारे अवसर प्रदान करता है। उन्होंने पिछले कई वर्षों से सीएसआईआर-आईआईसीटी के साथ सीईएफआईपीआरए के सहयोग का भी उल्लेख किया।

नेशनल सेंटर फॉर साइंटिफिक रिसर्च (सीएनआरएस) के अध्यक्ष और सीईओ डॉ. एंटोनी पेटिट और ओपन रिसर्च डेटा डिपार्टमेंट (डीडीओआर) की वरिष्ठ वैज्ञानिक और प्रमुख डॉ. सिल्वी रूसेट ने क्रमशः सीएनआरएस और डीडीओआर, इसके उद्देश्यों, कार्यों और लेखों और डेटा की खुली पहुँच को वैज्ञानिक अनुसंधान में एक आदर्श बनाने में उनकी भूमिका के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। डॉ. कस्तूरी मंडल, सीएसआईआर-निस्पर और डॉ. सिल्वी



रुसेट, सीएनआरएस-डीडीओआर ने इस दो दिवसीय संगोष्ठी के कार्यक्रम की रूपरेखा जैसे-चर्चा के विषय और विभिन्न सत्रों के विषयों के बारे में बताया।

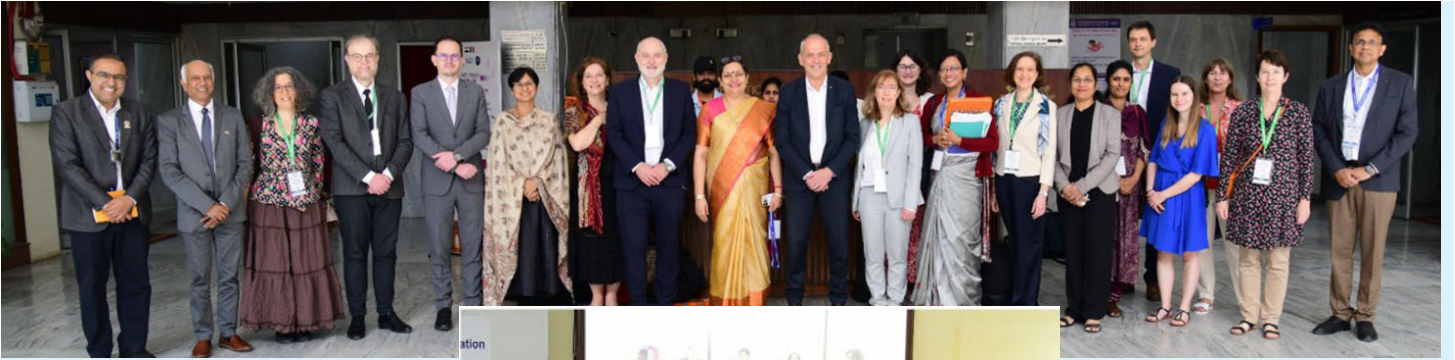
संगोष्ठी का पहला सत्र "फ्रांस और भारत में ओपन एक्सेस, ओपन साइंस के लिए नीतियां" विषय पर तैयार किया गया था, जिसकी अध्यक्षता भारत सरकार के नीति आयोग के वरिष्ठ सलाहकार प्रो. विवेक कुमार सिंह ने की। फ्रांस के उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान मंत्रालय की डॉ. मारिन डेकोस ने खुले विज्ञान के लाभों पर चर्चा की तथा शैक्षणिक दक्षता में वृद्धि, पुनरुत्पादकता, दोहराव की रोकथाम और उद्घरण में वृद्धि पर प्रकाश डाला। उन्होंने देश में फ्रांसीसी ओपन साइंस नीतियों की मुख्य विशेषताएं भी साझा कीं। भारत सरकार के पीएसए कार्यालय की डॉ. रेम्या हरिदासन ने 'वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन' (ओएनओएस) पहल पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने इसकी आवश्यकता क्यों थी, विज्ञान के प्रसार पर इसका क्या प्रभाव है और कार्यान्वयन के दौरान हितधारकों के सामने आने वाली बाधाओं को रेखांकित किया। ओपन साइंस और डेटा पर अपने विचार साझा करने वाले अन्य वक्ताओं में डॉ. सिल्वी रुसेट और सीएसआईआर-निस्पर के मुख्य वैज्ञानिक श्री मुकेश पुंड शामिल थे।

दूसरा सत्र "ओपन एक्सेस: ए डायवर्सिटी ऑफ रूट्स" विषय पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता जेएनयू, नई दिल्ली के स्कूल ऑफ कम्यूटेशनल एंड इंटीग्रेटिव साइंसेज (एससीआईएस) के प्रोफेसर अनिरबन चक्रवर्ती ने की। डॉ. बेनेडिक्ट कुंटज़िगर, सीसीएसडी, सीएनआरएस ने अपने व्याख्यान के दौरान कहा कि सीसीएसडी में हम फ्रांसीसी राष्ट्रीय ओपन एक्सेस रिपोजिटरी एचएएल के माध्यम से ओपन एक्सेस को बढ़ावा देते हैं, जिससे प्रकाशनों तक दीर्घकालिक, बाधा-मुक्त पहुंच सुनिश्चित होती है। उन्होंने कहा बताया कि विशेष रूप से वर्ष 2024 में 1,67,751 पूर्ण-पाठ दस्तावेज जमा किए गए, जिससे जनवरी 2025 तक एचएएल के माध्यम से उपलब्ध कुल 1.4 मिलियन से अधिक पूर्ण-पाठ दस्तावेज जमा हो गए। डॉ. फ्रांस्वा रुसो, कूपेरिन कंसोर्टियम ने उस मॉडल के बारे में बताया जिसके माध्यम से वे खुले विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए प्रमुख विज्ञान प्रकाशकों के साथ बातचीत करते हैं। अन्य वक्ताओं में डीएसटी-सीपीआर, आईआईएससी बैंगलोर के डॉ. सुब्बैया अरुणाचलम शामिल थे, जिन्होंने भारत में ओपन एक्सेस के व्यापक परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत किया तथा अनुसंधान के लिए ओपन एक्सेस को बढ़ावा देने में देश की प्रगति पर प्रकाश डाला। सीएसआईआर-एचआरडीजी की प्रमुख डॉ. गीता वाणी रायसम ने ओपन

सोर्स और औषधि खोज पर अपने विचार साझा किए तथा औषधि खोज और विकास में तेजी लाने में ओपन सोर्स दृष्टिकोण की क्षमता पर प्रकाश डाला।

पहले दिन का तीसरा सत्र "ओपन एक्सेस: ए डायवर्सिटी ऑफ रूट्स (भाग II)" विषय पर आधारित था, इसके अंतर्गत दूसरे सत्र का विस्तार था। सत्र की अध्यक्षता सीएनआरएस-डीडीओ के डॉ. लॉरेंस एल. खौरी ने की। साइंस यूरोप की डॉ. लिडिया बोरेल-डेमियन सहित वक्ताओं ने डायमंड एक्शन प्लान के लाभों पर चर्चा की, जो पूरे डायमंड ओए पारिस्थितिकी तंत्र के लिए सामान्य संसाधनों को संरक्षित और विकसित करने का प्रस्ताव करता है। शिव नादर विश्वविद्यालय की प्रो. राजेश्वरी रैना ने शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं से व्यापक दृष्टिकोण को अपनाने पर जोर दिया और कहा कि यह एक योजना, एक राष्ट्र या एक क्षेत्र के बारे में नहीं है, हमें वैश्विक पहलुओं को देखना होगा और इस प्रकार वैश्विक स्तर पर ओपन एक्सेस के क्षितिज और सीमाएँ निर्धारित करने की आवश्यकता है। एपिसाइंसेस के डॉ. राफेल टूरनोय ने ओवरले जर्नल्स के महत्व पर चर्चा की।

पहले दिन के सभी सत्र प्रश्नोत्तर सत्र के साथ समाप्त हुए, जहाँ विशेषज्ञों ने दर्शकों के सवालों के जवाब दिए और खुले विज्ञान के



भविष्य पर अपने विचार साझा किए। ओपन साइंस एंड रिसर्च डेटा पर भारत-फ्रांस संगोष्ठी का दूसरा दिन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ, जिसमें कम्प्यूटेशनल इनोवेशन, शोध मूल्यांकन और ओपन डेटा शेयरिंग पर व्यावहारिक चर्चा और प्रस्तुतियाँ शामिल थीं। इस दिन की शुरुवात "कम्प्यूटेशनल इनोवेशन और ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर में आरएंडडी" पर एक सत्र के साथ हुई, जिसकी अध्यक्षता सीएसआईआर-निस्पर के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अविनाश क्षितिज ने की। इस सत्र में प्रोफेसर रॉबर्टो डि कॉस्मो, आईएनआरआईए, ने "सॉफ्टवेयर हेरिटेज पहल" पर चर्चा की। तत्पश्चात प्रोफेसर पी.के. सूरी, दिल्ली प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने "कृषि में डेटा मानकीकरण" पर एक व्याख्यान दिया। डॉ. श्रीधर गौतम, आईसीएआर-भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान ने "ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर, ओपन एक्सेस और ओपन डेटा के साथ आरएंडडी को आगे बढ़ाना" विषय पर बात की। श्री जी. मायली मुथु कुमारन उप महानिदेशक, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एनआईसी) ने कम्प्यूटेशनल इनोवेशन और ओपन सोर्स पर चर्चा की और एनआईसी में कम्प्यूटेशनल इनोवेशन में आरएंडडी की दिशा में मुख्य पहल पर विस्तार से बताया। इसके बाद "शोध के मूल्यांकन में सुधार" विषय पर एक सत्र आयोजित किया गया, जिसमें निम्नलिखित प्रस्तुतियाँ दी गईं:



डॉ. लिडिया बोरेल-डेमियन, साइंस यूरोप, ने "शोध मूल्यांकन में सुधार और सीओएआरए पहल" पर चर्चा की। डॉ. विनायक, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर ने "विज्ञान के चरणों को मापने के लिए कुछ नए तरीके" पर बात की। आईआईएससी, बेंगलुरु की डॉ. मौमिता कोले ने "शोध मूल्यांकन पर पुनर्विचार: भारत में एक कुशल और अभिनव शोध पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण" विषय पर चर्चा की और डॉ. निशी. पी, सीएसआईआर-नीस्ट ने "शोध मूल्यांकन और भविष्य के रुझानों के लिए खुला स्रोत" पर बात की।

संगोष्ठी में "ओपन डेटा शेयरिंग" पर एक सत्र भी आयोजित किया गया, जिसमें एनआईसी की उप महानिदेशक सुश्री अलका मिश्रा ने "भारत सरकार की ओपन डेटा शेयरिंग पहल" पर चर्चा की। फ्रांस के उच्च शिक्षा और अनुसंधान मंत्रालय के डॉ. मारिन डेकोस ने "शोध डेटा साझा करने और खोलने के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र" प्रस्तुत किया और सीएसआईआर-निस्पर के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. नरेश कुमार ने "विज्ञान में डेटा साझा करना" पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के सातवें सत्र में "ओपन साइंस, ओपन डेटा और ओपन सोर्स का भविष्य"

विषय पर एक पैनल चर्चा आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल थे, जिनमें डॉ. सुजीत भट्टाचार्य; डॉ. लॉरेंस एल खौरी, सीएनआरएस-डीडीओआर; डॉ.

रोबर्टो डी कॉस्मो, आईएनआरआईए सॉफ्टवेयर हेरिटेज; डॉ. दीपाली कुबेरकर, टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल; डॉ. कस्तूरी मंडल, सीएसआईआर-निस्पर, नई दिल्ली; डॉ. योगेश धोबले, सीएसआईआर-आईपीयू, नई दिल्ली और डॉ. संध्या लक्ष्मणन, सीएसआईआर-निस्पर शामिल थे।

भारत-फ्रांस संयुक्त संगोष्ठी के समापन के अवसर पर सीएसआईआर-निस्पर के वैज्ञानिक डॉ. नरेश कुमार ने स्वागत भाषण दिया तथा कम्प्यूटेशनल इनोवेशन में अनुसंधान एवं विकास में ओपन साइंस, ओपन सोर्स और ओपन डेटा पर दो दिवसीय गहन विचार-विमर्श की मुख्य बातें बताईं। जेएनयू के प्रोफेसर अनिरबन चक्रवर्ती ने ओपन साइंस के संचालन की दिशा में आगे बढ़ने में संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बात की, डॉ. लॉरेंस और डॉ. अविनाश क्षितिज ने 6 अलग-अलग विषयों पर दो दिवसीय विचार-विमर्श का सारांश प्रस्तुत किया, सीएसआईआर-निस्पर के श्री मुकेश पुंड ने धन्यवाद ज्ञापन के दौरान भारतीय और फ्रांसीसी वक्ताओं, विद्वानों, प्रतिनिधियों और विभिन्न भूमिकाओं में शामिल सभी व्यक्तियों के प्रति अपना आभार व्यक्त किया।

सीएसआईआर-आईएचबीटी में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन

सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर ने 28 फरवरी 2025 को अपने कार्यालय परिसर में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया। यह दिन सर सी.वी. रमन द्वारा 1928 में रमन प्रभाव की खोज करने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, जिसके लिए उन्हें वर्ष 1930 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया



था। इस वर्ष राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का विषय "विकसित भारत के लिए विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व के लिए भारतीय युवाओं को सशक्त बनाना" था। इस अवसर पर डॉ. बैरी पोगसन, ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी, ऑस्ट्रेलिया, समारोह के मुख्य अतिथि तथा इस अवसर पर डॉ. बैरी पोगसन, ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी, ऑस्ट्रेलिया, समारोह के मुख्य अतिथि तथा डॉ. ऋषिकेश भालेराओ, स्वीडिश अकैडमी ऑफ एग्रिकल्चर, स्वीडन, समारोह के सम्मानित अतिथि थे।

सीएसआईआर-आईएचबीटी के निदेशक डॉ. सुदेश कुमार यादव ने अपने संबोधन में सभी श्रोताओं का स्वागत किया और राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने संस्थान के वैज्ञानिक प्रयासों और कार्यों की जानकारी दी तथा बताया कि कैसे इनसे जैव-

आर्थिक और लोगों की आजीविका को सुधारने में मदद मिली है। डॉ. बैरी ने अपने संबोधन में फसल सुधार के लिए नई प्रजनन प्रौद्योगिकियों, इनकी संभावनाओं और अप्रत्याशित बाधाओं पर चर्चा की और बदलते पर्यावरण और बढ़ती जनसंख्या में प्रजनन प्रौद्योगिकियों की भूमिका पर जोर दिया।

तत्पश्चात डॉ. ऋषिकेश भालेराओ, स्वीडिश अकैडमी ऑफ एग्रिकल्चर, स्वीडन ने अपने संबोधन में विज्ञान में और अधिक निवेश एवं युवाओं को आकर्षित करने पर बल दिया। उन्होंने विशेष रूप से पुष्पविज्ञान और सगंध मिशन के उदाहरण दिए। उन्होंने जोर दिया कि विज्ञान को नई उभरती समस्याओं और राष्ट्रीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए हमें कार्य करना चाहिए। उन्होंने जिज्ञासा पहल और कौशल विकास कार्यक्रमों के बारे

में बताया जो युवाओं को सशक्त बनाने पर केंद्रित हैं। उन्होंने सभी से एक साथ आने और विकसित भारत के निर्माण की दिशा में योगदान करने का आग्रह किया। इस अवसर पर सूखे फूलों से हस्तशिल्प बनाने की तकनीक का हस्तांतरण किया गया, जबकि किसानों को पियोनी और गेंदा के उच्च गुणवत्ता वाली पौधरोपण सामग्री वितरित की गई। इस कार्यक्रम में, संस्थान के कर्मियों और छात्रों के अलावा ई.एम.बी.ओ कार्यशाला के प्रतिभागी, निकटवर्ती संगठनों के कर्मचारी, एवं वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जिया, कांगड़ा के छात्र और शिक्षकों ने प्रतिभागिता की। संस्थान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह के साथ ही सीएसआईआर-आईएचबीटी द्वारा आयोजित 4 दिवसीय ई.एम.बी.ओ अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला भी पूर्ण हुई।

सीएसआईआर-एनपीएल द्वारा अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन



सी.एस.आई.आर. – राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (एनपीएल) ने अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर दिनांक 21 फरवरी, 2025 को "भारतीय निर्देशक द्रव्य: आत्मनिर्भर भारत के लिए गुणवत्ता मानक" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन, सरस्वती वंदना और मुख्य अतिथि के स्वागत से हुई। यह संगोष्ठी भारतीय निर्देशक द्रव्य (बीएनडी) के महत्व और आत्मनिर्भर भारत के लिए उनके योगदान पर केंद्रित थी।

डॉ. एस. पी. सिंह (विभागाध्यक्ष, बीएनडी) ने मंचासीन गणमान्य अतिथियों सहित सभागार में उपस्थित विद्वतजनों का स्वागत किया। उन्होंने संगोष्ठी के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए आत्मनिर्भर भारत की दिशा में मिलकर काम करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

उद्घाटन उद्बोधन में प्रोफेसर वेणुगोपाल अचंता, निदेशक, सीएसआईआर-एनपीएल ने बीएनडी की महत्ता के बारे में बताया और इनके उपयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया। विशिष्ट अतिथि डॉ. मुकुल दास, निदेशक, श्रीराम औद्योगिक अनुसंधान

संस्थान ने बीएनडी के भारतीय स्वास्थ्य और जल संसाधन क्षेत्र में योगदान की महत्ता को रेखांकित किया।

विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर (डॉ.) पी मेहरा, लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज ने स्वास्थ्य मानकों पर जोर दिया और 'मेक इन इंडिया' उत्पादों का अधिक उपयोग करने की बात की।

समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. मोहन कृष्णा रेड्डी मुडियम, निदेशक, आईपीएफटी ने कीटनाशक संदर्भ सामग्री के महत्व पर व्याख्यान दिया। संगोष्ठी की एंकरिंग श्री जय नारायण उपाध्याय, हिंदी अधिकारी द्वारा की गई। श्री अरविन्द गौतम, प्रधान वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापन दिया और कार्यक्रम का समापन राष्ट्रीय गीत और ग्रुप फोटो (समूह चित्र) के साथ हुआ।

व्याख्यान सत्र में कई विशेषज्ञों ने महत्वपूर्ण विचार साझा किए: डॉ. एस. के. ब्रेजा (पूर्व संयुक्त निदेशक, सीमेंट और निर्माण सामग्री परिषद) ने निर्माण उद्योग में बीएनडी के योगदान पर प्रकाश डाला।

डॉ. दुष्यंत हवलकर, बीआईएस ने भारतीय मानकों के निर्माण पर चर्चा की। साथ ही, ने बीएनडी की महत्व पर चर्चा करते हुए कहा कि इनके उपयोग को बृहत्तर स्तर पर बढ़ावा दिया जाए, ताकि आयात पर निर्भरता कम हो।

डॉ. एस. के. त्यागी, पूर्व अपर निदेशक, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने पर्यावरण विज्ञान में संबंधित संदर्भ सामग्री की भूमिका को स्पष्ट किया।

डॉ. संदीप कुमार लाल, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने कृषि क्षेत्र में पौधों से संबंधित रक्षा रसायनों और खाद्य सुरक्षा मानकों पर चर्चा की। डॉ. सुनीता गर्ग, पूर्व मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर ने आयुर्वेद / वनस्पतियों के संग्रहालय नमूनों के संरक्षण हेतु मानकों की भूमिका पर प्रकाश डाला।

समापन सत्र में "सशक्त औद्योगिक अर्थव्यवस्था के लिए गुणवत्ता मानकीकरण की आवश्यकता" पर छात्र प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। भाषण प्रतियोगिता में प्रज्ञा सिंह और दीप्ति गोयल को प्रथम पुरस्कार, छवि को द्वितीय, सिमी शर्मा को तृतीय पुरस्कार और रिमझिम यादव एवं भूमि को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ।

डॉ. एस.पी. सिंह ने कार्यक्रम का समापन संदेश दिया और सभी गणमान्य अतिथियों/वक्ताओं सहित इस संगोष्ठी के सफल आयोजन में प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देनेवाले सभी सदस्यों एवं बीएनडी टीम को अनेक हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया।

सीएसआईआर-सीमैप द्वारा किसानों के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

सीएसआईआर-केन्द्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान (सीएसआईआर-सीमैप) ने हाल ही में जिला उद्यान कार्यालय, गया, बिहार द्वारा चयनित किसानों को औषधीय एवं सगंध पौधों व खेती व इन पौधों के प्रयोग से बनने वाले उत्पादों की तकनीकी के प्रति जागरूक करने के लिए तीन दिवसीय एक कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में गया जनपद के 05 महिला किसान के साथ 17 प्रतिभागियों ने प्रतिभागिता की इस कार्यक्रम के आयोजन का मुख्य उद्देश्य किसानों को औषधीय एवं सगंध पौधों की खेती के साथ-साथ इनसे बनने वाले उत्पादों के बारे में उन्हें तकनीकी प्रशिक्षण भी प्रदान करना था ताकि वे प्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित हो सकें।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में डॉ. प्रबोध कुमार त्रिवेदी ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि सीएसआईआर-सीमैप पिछले 60 वर्षों से औषधीय एवं सगंध पौधों की खेती में किसानों को प्रोत्साहित कर रहा है। यह नई-नई कृषि तकनीकी, पौध सामग्री एवं उन्नतशील प्रजातियां किसानों को उपलब्ध करा रहा है जिसके परिणाम स्वरूप लाखों किसानों को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से लाभ पहुंच रहा है। संस्थान की विकसित उन्नत प्रजातियों एवं तकनीकों को अपनाकर किसानों ने देश को मेंथा तथा नीबूघास के तेल के उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान दिलाया है। उन्होंने आशा एवं पूर्ण विश्वास जताया कि किसान भाई यहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने-अपने जिलों के अन्य किसानों को



औषधीय, सगंध पौधों व फूलों की खेती के प्रति जागरूक करेंगे। उन्होंने कहा कि इस तरह सभी लोग मिल कर कार्य करेंगे तो दूसरे सगंधीय तेलों जैसे खस, पामारोजा व अन्य सगंधीय तेलों में आत्मनिर्भरता के साथ निर्यात भी कर सकेंगे। डॉ. त्रिवेदी ने कहा कि मुझे आशा है कि बीते तीन दिनों में वैज्ञानिकों द्वारा औषधीय एवं सगंध पौधों की खेती, प्राथमिक प्रसंस्करण व विपणन विषय पर दी गई बहुमूल्य जानकारियों का भरपूर लाभ उठाएंगे।

इस अवसर पर सीएसआईआर-सीमैप द्वारा विकसित हर्बल उत्पादों सिम-सुगंधा-सुगंधित तेलों पर आधारित हर्बल साबुन व क्लीनजर्म-सुगंधित फ्लोर क्लीनर की तकनीक सहायक निदेशक, उद्यान, जिला उद्यान कार्यालय, गया (जिला बागवानी विकास समिति) चंदौती, गया, बिहार को हस्तांतरित की गई।

तकनीकी सत्र में डॉ. संजय कुमार ने संस्थान द्वारा प्रदत्त सेवाओं व गतिविधियों के साथ-साथ नीबूघास व रोशाघास के उत्पादन

की उन्नत तकनीकी के बारे में विस्तार से प्रतिभागियों को बताया।

तत्पश्चात डॉ. राम सुरेश शर्मा ने खस व तुलसी के उत्पादन की उन्नत तकनीकी प्रतिभागियों से साझा की। डॉ. रमेश कुमार श्रीवास्तव ने सीएसआईआर-सीमैप में उपलब्ध विभिन्न उत्पादों की तकनीकी हस्तांतरण की प्रक्रिया को प्रतिभागियों से साझा की। तत्पश्चात डॉ. ऋषिकेश भिसे ने कालमेघ के उत्पादन की उन्नत कृषि तकनीकी के बारे में बताया। डॉ. राम स्वरूप वर्मा ने सुगंधित पौधों से तेल का आसवन, संशोधन एवं उनके रख-रखाव के बारे में प्रतिभागियों को बताया। सगंध पौधों का प्रयोगशाला स्तर पर सुगंधित तेलों के आसवन का प्रदर्शन तथा औषधीय एवं सगंध पौधों का रोपण व नर्सरी विधि का सजीव प्रदर्शन भी किया गया।

अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सीएसआईआर-एनबीआरआई ने विश्व का पहला पिंक बॉलवर्म-प्रतिरोधी जीएम कपास विकसित किया

सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-एनबीआरआई), लखनऊ ने कृषि क्षेत्र के लिए एक अभूतपूर्व विकास की दिशा में विश्व के पहले आनुवंशिक रूप से संशोधित (जीएम) कपास पौधे को बनाने में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है जो पिंक बॉलवर्म (पीबीडब्ल्यू) के लिए पूरी तरह से प्रतिरोधी है। पिंक बॉलवर्म एक कीट है जिसने भारत, अफ्रीका और एशिया में कपास की उत्पादकता को प्रभावित किया है।

भारत में वर्ष 2002 में जी.एम. कपास के आने के बाद सेंट लुइस, यू.एस.ए. की कंपनी मोनसेंटो के साथ संयुक्त रूप से विकसित बोलगार्ड 1 और बोलगार्ड 2 जैसी किस्मों ने कुछ बोलवर्म प्रजातियों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता लाने में काफी प्रयास किया। हालांकि समय के साथ ये किस्में पिंक बोलवर्म (पी.बी.डब्ल्यू.) के खिलाफ पूर्ण प्रतिरोधकता हासिल करने में असमर्थ रही हैं। पिंक बोलवर्म को भारत में स्थानीय रूप से गुलाबी सुंडी के रूप में जाना जाता है। समय के साथ पिंक बोलवर्म ने इन किस्मों में उपयोग किए जाने वाले क्राई 1 एसी और क्राई 2 एबी प्रोटीन के प्रति प्रतिरोधक क्षमता को भी विकसित कर लिया था जिससे भारत में कपास की पैदावार में काफी गिरावट दर्ज की गई।

इस महत्वपूर्ण कमी को दूर करते हुए

सीएसआईआर-एनबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. पी.के. सिंह एवं उनकी टीम द्वारा एक नए कीटनाशक जीन विकसित किया

परीक्षणों से व्यापक बहु स्थान डेटा उत्पन्न करेगा। एक बार जब ये अध्ययन तकनीक की सुरक्षा की पुष्टि करेंगे तो बीजों को आगे की



गया है। यह स्वजनित जीन, पिंक बोलवर्म के विरुद्ध अधिक रूप से प्रभावी है। संस्थान में हुए विभिन्न प्रयोगशाला परीक्षणों से यह भी पता चला कि नया जीएम कपास पिंक बोलवर्म के प्रति अत्यधिक प्रतिरोधी है। साथ ही यह अन्य कीड़ों जैसे कपास के पत्ते के कीड़े और फॉल आर्मीवर्म से भी सुरक्षा प्रदान करता है।

इस अग्रणी तकनीक की क्षमता को पहचानते हुए नागपुर स्थित कृषि-जैव प्रौद्योगिकी कंपनी मेसर्स अंकुर सीड्स प्राइवेट लिमिटेड को सीएसआईआर-एनबीआरआई की इस तकनीक का हस्तांतरण किया गया है। अंकुर सीड्स विनियामक दिशा-निर्देशों के अनुसार सुरक्षा अध्ययनों पर सहयोग करेगा और अपने स्वामित्व वाली संकर कपास किस्मों में एनबीआरआई तकनीक के साथ क्षेत्र

विविधता और संकर विकास के लिए कई बीज कंपनियों को लाइसेंस दिया जाएगा जिससे व्यापक व्यावसायीकरण हो सकेगा।

इस स्वदेशी, विश्व स्तर पर अद्वितीय जीएम तकनीक संधारणीय कृषि की दिशा में एक महत्वपूर्ण छलांग है। गुलाबी बॉलवर्म के लगातार खतरे से कपास की रक्षा करके सीएसआईआर-एनबीआरआई का नवाचार न केवल लाखों किसानों की आजीविका की रक्षा करता है, बल्कि दुनिया भर में कीट प्रतिरोध के लिए एक नया मानदंड भी स्थापित करता है। यह सफलता आत्मनिर्भर भारत के बैनर तले भारतीय नवाचार का एक शानदार उदाहरण है जो उच्च पैदावार, बेहतर किसान आय और स्वच्छ पर्यावरण का भविष्य का वादा करता है।

सीएसआईआर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह का आयोजन



वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (सीएसआईआर-एनपीएल) में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया, जिसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया। इस कार्यक्रम में विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री और सीएसआईआर के उपाध्यक्ष डॉ. जितेंद्र सिंह की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम में भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार प्रोफेसर अजय कुमार सूद, सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के निदेशक और सीएसआईआर मुख्यालय निदेशालयों के प्रमुख उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में श्रीमती कल्पना कलाहस्ती, इसरो के चंद्रयान-3 मिशन की एसोसिएट परियोजना निदेशक और सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों से सम्बद्ध तीन महिला उद्यमियों यथा- डॉ. दिशा

आहूजा (सीएसआईआर-आईआईसीटी की एजीआर टेक्नोलॉजी), श्रीमती पी. सुधा रेड्डी (सीएसआईआर-सीएमईआरआई का ई-ट्रेक्टर) और श्रीमती शिखा वर्मानी (सीएसआईआर-आईआईआईएम के मूल्यवर्धित लैवेंडर उत्पाद) को आमंत्रित अतिथि के रूप में शामिल किया गया था। प्रतिभागियों में देश भर के सीएसआईआर संस्थानों और प्रयोगशालाओं से नामित सीएसआईआर अधिकारी भी शामिल थे।

इस अवसर पर माननीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री, डॉ. जितेन्द्र सिंह ने विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी पर जोर दिया। उन्होंने सिविल सेवाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व में उल्लेखनीय वृद्धि का उल्लेख



किया, जो पिछले वर्षों में 2-3% से बढ़कर वर्तमान में 25-30% हो गया है।

भारत सरकार के पीएसए प्रोफेसर अजय कुमार सूद ने अपने संबोधन में बताया गया कि स्टेम (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी और अंकगणित) क्षेत्रों में 42.7% महिला स्नातकों के साथ भारत विश्व स्तर पर अग्रणी है। इसके अतिरिक्त, 2025 में 1.5 लाख भारतीय स्टार्टअप में से 74,000 से अधिक में कम से कम एक महिला निदेशक होगी। तत्पश्चात



सीएसआईआर की पहली महिला महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी ने सभी विषयों में महिलाओं के अपरिहार्य योगदान को सराहा तथा उनकी भावनात्मक शक्ति और लचीलेपन पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर श्रीमती कल्पना कालाहस्ती, एसोसिएट प्रोजेक्ट डायरेक्टर, चंद्रयान-3 को भारत के सफल चंद्र मिशन में महत्वपूर्ण भूमिका के लिए सम्मानित किया गया।

तत्पश्चात कार्यक्रम में महिला उद्यमियों की उपलब्धियों पर प्रकाश डालने वाला एक नाटक प्रस्तुत किया गया और उसके बाद निम्नांकित महिला उद्यमियों के महत्वपूर्ण उपलब्धियों के बारे में बताया गया।

- डॉ. दिशा आहूजा, सीएसआईआर-भारतीय रसायन प्रौद्योगिकी संस्थान के एनारोबिक गैस लिफ्ट रिएक्टर (एजीआर) का उपयोग करने वाले बायोगैस संयंत्रों के क्षेत्र से सबद्ध उद्यमी हैं। इस टेक्नोलॉजी का उपयोग खाना पकाने और जैव उर्वरकों के लिए बायोडिग्रेडेबल कचरे को बायोगैस में परिवर्तित करने के लिए एक उन्नत बायोमेथेनेशन प्रक्रिया के लिए किया जाता है। वर्ष 2015 में इसके शुभारंभ के बाद, देश भर में लगभग 40 ऐसे संयंत्र स्थापित किए गए हैं, जिनमें हैदराबाद में बोवेनपल्ली सब्जी बाजार और फरीदाबाद में अमृता अस्पताल जैसे



स्थान शामिल हैं।

- श्रीमती पी. सुधा रेड्डी: सीएसआईआर-सीएमईआरआई के प्राइम ईटी11 ई-ट्रैक्टर से सम्बद्ध उद्यमी हैं जो संधारणीय कृषि में योगदान देने वाला एक नवीन इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर है।
- श्रीमती शिखा वर्मानी : "द पर्पल हिमालयाज" के संस्थापक, जो सीएसआईआर द्वारा समर्थित पर्पल क्रांति से उपजी एक पहल है, यह जम्मू और कश्मीर में लैवेंडर की खेती को बढ़ावा देती है और सीएसआईआर-आईआईआईएम के मूल्यवर्धित लैवेंडर उत्पादों का विकास करती है।
- इस अवसर पर सीएसआईआर की एस्पायर योजना के अंतर्गत चयनित परियोजनाओं का संग्रह जारी किया गया, जिसमें तीन वर्षों में लगभग 300 महिला वैज्ञानिकों को प्रदान किए गए अनुसंधान अनुदानों को प्रदर्शित किया गया और सीएसआईआर की महिला शक्ति का उत्सव मनाने वाला एक वीडियो भी जारी

किया गया।

सीएसआईआर सदस्यों द्वारा मंचित एक नाटक में महिला उद्यमियों द्वारा लाइसेंस प्राप्त और प्रचारित विभिन्न सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों पर प्रकाश डाला गया। प्रदर्शित प्रौद्योगिकियों और योजनाओं में गैर-सीएसआईआर शोधकर्ताओं के लिए सीएसआईआर का एस्पायर एकमुश्त अनुसंधान अनुदान; ई-ट्रैक्टर प्राइम ईटी11; मंदिरों में चढ़ाए गए फूलों से अगरबत्ती और अन्य उपयोगी उत्पादों का उत्पादन; एजीआर प्रौद्योगिकी; और लैवेंडर फूल की व्यापक खेती से जम्मू और कश्मीर में आई बैंगनी क्रांति भी शामिल थी। इस कार्यक्रम के एक भाग के रूप में प्रतिभागियों के लिए 'सीएसआईआर के बारे में आप कितना जानते हैं?' विषय पर एक प्रश्नोत्तरी सत्र भी आयोजित किया गया।

इस समारोह में सीएसआईआर की उस प्रतिबद्धता को रेखांकित किया गया, जिसके तहत विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं के योगदान को मान्यता दी जाएगी और उसे बढ़ावा दिया जाएगा।

सीएसआईआर-आईआईआईएम ने एआईसी और स्टार्ट-अप्स के साथ समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर किया

सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान (सीएसआईआर-आईआईआईएम) ने हाल ही में अपने श्रीनगर शाखा में नीति आयोग के अटल इनोवेशन मिशन के तत्वावधान में स्थापित अटल इनक्यूबेशन सेंटर (एआईसी) के साथ मिलकर नवाचार और विकास को बढ़ावा देने के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर स्टार्ट-अप के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर और प्रमाण पत्र का वितरण किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सुगंधित और औषधीय पौधों, न्यूट्रास्युटिकल मशरूम, किण्वन-आधारित उत्पादों और प्राकृतिक उत्पाद-आधारित उद्यमों जैसे क्षेत्रों में स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र का समर्थन करना था। इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण एआईसी-आईआईआईएम और पांच अभिनव स्टार्टअप यथा- मेसर्स ग्लेन बायोटेक, मेसर्स डुरेन टी एलएलपी, मेसर्स एमिलियू प्राइवेट लिमिटेड, मेसर्स कश्मीर एरोमैटिक्स और मेसर्स नेचर बायोटेक लैब्स के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर करना था।

हर्बल चाय, आवश्यक तेलों और कॉर्डिसेप्स उत्पादन में विशेषज्ञता रखने वाले इन स्टार्टअप को अनुसंधान और उत्पाद विकास को आगे बढ़ाने में उनके योगदान के लिए मान्यता दी गई। सीएसआईआर-आईआईआईएम के निदेशक डॉ. ज़बीर अहमद और एआईसी-आईआईआईएम बायो इनोवेशन फाउंडेशन और स्टार्टअप संस्थापकों के अध्यक्ष के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। समझौता ज्ञापन का मुख्य उद्देश्य नवाचार, आर्थिक विकास और



एक ठोस सामाजिक प्रभाव का मूल्यांकन करना था। डॉ. ज़बीर अहमद ने अपने अध्यक्षीय भाषण में इस बात पर जोर दिया कि इन सहयोगों से नवाचार, आर्थिक विकास और ठोस सामाजिक प्रभाव को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने स्टार्टअप्स को एआईसी-आईआईआईएम के पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया, जिसमें अत्याधुनिक आरएंडडी संसाधनों तक पहुंच, विशेषज्ञ सलाह और बाजार लिंकेज शामिल हैं, ताकि उन्हें अपने उद्यमों को सफलतापूर्वक बढ़ाने में मदद मिल सके। समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के बाद, इस कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीएलआरआई सेंटर जालंधर में एक सप्ताह का औद्योगिक प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा करने वाले चर्म प्रशिक्षुओं की उपलब्धियों को मान्यता दी गई, साथ ही एआईसी-आईआईआईएम शाखा, श्रीनगर में दो और छह महीने के चर्म प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरे करने वालों को भी सम्मानित

किया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य चर्म प्रसंस्करण, उत्पाद विकास और व्यावसायिक रणनीतियों में कौशल बढ़ाना, उनके उद्यमशीलता और रोजगार के अवसरों में सुधार करना था। कार्यक्रम में हैकथॉन 4.0 के विजेताओं को भी सम्मानित किया गया, जिसमें उद्योग की चुनौतियों के लिए उनके अभिनव समाधानों को स्वीकार किया गया। इस कार्यक्रम में युवा नवोन्मेषकों और उद्यमियों की उपस्थिति ने समस्या-समाधान और उद्यम विकास की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए एआईसी-आईआईआईएम की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया गया। डॉ. ज़बीर ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह का आभार व्यक्त किया, जिन्होंने सीएसआईआर-आईआईआईएम के मिशन को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने हाल ही में सीएसआईआर-सीएलआरआई सेंटर

जालंधर में औद्योगिक प्रशिक्षण के लिए जाने वाले चर्म प्रशिक्षुओं के लिए हरी झंडी दिखाने के समारोह पर प्रकाश डाला, जो आर्थिक विकास को गति देने के लिए युवाओं को उद्योग-संबंधित कौशल से लैस करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। कार्यक्रम के दौरान, डॉ. सौरभ सरन, पीआई,

एआईसी ने एआईसी सेंटर की स्थापना के बारे में जानकारी दी, जबकि डॉ. शाहिद जिब्रान, सीईओ, आईआईआईएम-एआईसी ने इसके विज्ञान, मिशन और गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताया। सीएसआईआर-आईआईआईएम, श्रीनगर के प्रमुख अब्दुल रहीम सहित सीएसआईआर-आईआईआईएम

श्रीनगर के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों और हितधारकों ने कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम का समापन स्टार्टअप को सशक्त बनाने, उद्योग-अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देने और क्षेत्र में टिकाऊ, नवाचार-संचालित विकास को बढ़ावा देने के लिए एआईसी-आईआईआईएम की प्रतिबद्धता की पुष्टि के साथ हुआ।

सीएसआईआर-एनएमएल ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर योग और पोषण विषय पर व्याख्यान आयोजित किया



सीएसआईआर-राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला (सीएसआईआर-एनएमएल), जमशेदपुर ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की पूर्व संध्या पर ने अपने कर्मचारियों के बीच स्वस्थ जीवन को बढ़ावा देने के लिए “योग, मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण और आहार तथा पोषण” पर विशेष व्याख्यान आयोजित किए।

इस अवसर पर टाटा स्टील के जेआरडी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के पूर्व योग गुरु अरविंद प्रसाद ने “योग, मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण” पर विशेष व्याख्यान दिया, जिसमें मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में योग की भूमिका पर जोर दिया गया। तत्पश्चात सीएसआईआर-एनएमएल की चिकित्सा अधिकारी डॉ. प्रियंका सिंह ने



“आहार और पोषण” पर विस्तारपूर्वक बात की, जिसमें बीमारियों को रोकने और स्वस्थ जीवन शैली जीने में संतुलित आहार के महत्व पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने नियमित योग के महत्व को रेखांकित किया।

इस कार्यक्रम में महिला वैज्ञानिकों, तकनीकी शोधकर्ताओं, प्रशासनिक कर्मचारियों, छात्रों और प्रयोगशाला के अस्थायी कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों ने आधुनिक जीवन शैली में योग को अपनाने और बेहतर स्वास्थ्य

के लिए सूचित आहार विकल्प बनाने के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त की।

कार्यक्रम का संचालन अनुभाग अधिकारी डॉ. रानू वर्मा ने किया, कार्यक्रम का सफल आयोजन सीएसआईआर-

एनएमएल के निदेशक डॉ. संदीप घोष चौधरी के निर्देशन तथा प्रशासन नियंत्रक आदित्य मैनाक और प्रशासनिक अधिकारी विप्लव विशाल के मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य योगदान एनएमएल स्टाफ क्लब के डॉ. संजय अग्रवाल, डॉ. झुमकी हैत, परमार्थ सुमन, संतोष कुमार राय, वेद प्रकाश और मोहम्मद नईम अंसारी का रहा। अंत में वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अंशु जे. कैलाथ के धन्यवाद ज्ञापन के कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सीएसआईआर-सीआरआरआई द्वारा सड़क अवसंरचना परियोजनाओं में जियो-सिंथेटिक्स के अनुप्रयोग पर पांच दिवसीय एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

सीएसआईआर-केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान (सीआरआरआई), नई दिल्ली और राष्ट्रीय तकनीकी वस्त्र मिशन (एनटीटीएम), कपड़ा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संयुक्त रूप से एसआरकेआर इंजीनियरिंग कॉलेज के सहयोग से तकनीकी वस्त्रों में उम्मीदवारों के कौशल विकास और प्रशिक्षण के लिए 18 मार्च, 2025 को एसआरकेआर इंजीनियरिंग कॉलेज (स्वायत्त), भीमावरम में "सड़क अवसंरचना परियोजनाओं में जियो-सिंथेटिक्स के अनुप्रयोग" पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम सामान्य दिशानिर्देशों के तहत आयोजित किया गया है। सीएसआईआर-सीआरआरआई के निदेशक प्रो. मनोरंजन परिदा ने कॉलेज में 120 छात्रों को एक प्रेरक संबोधन के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने संबोधन में, प्रो. मनोरंजन परिदा ने सड़क अवसंरचना के स्थायित्व, स्थिरता और लागत-प्रभावशीलता को बढ़ाने में जियो-सिंथेटिक्स के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने छात्रों को उद्योग-प्रासंगिक कौशल से लैस करने और उन्हें वास्तविक दुनिया की अवसंरचना चुनौतियों के लिए तैयार करने में ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। सीआरआरआई के मुख्य वैज्ञानिक और परियोजना प्रमुख डॉ. पी. एस. प्रसाद ने सीआरआरआई के प्रधान वैज्ञानिक और कार्यक्रम समन्वयक डॉ. जी. भरत के साथ मिलकर एसआरकेआर इंजीनियरिंग कॉलेज के कार्यक्रम समन्वयकों: आरएंडडी के डीन प्रो. वामसी नागराजू और सिविल



इंजीनियरिंग विभाग के प्रमुख डॉ. जी. श्री बाला के साथ मिलकर इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया। उद्घाटन समारोह में एसआरकेआरआईसी के सचिव और संवाददाता श्री एस. आर. के. निशांत वर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम में एसआरकेआरआईसी के निदेशक और प्राचार्य भी मौजूद थे। उद्घाटन व्याख्यान के हिस्से के रूप में, मुख्य वैज्ञानिक और आईएलटी प्रभाग के प्रमुख डॉ. के. रविंदर ने सीएसआईआर-सीआरआरआई के भीतर परिवहन और सड़क क्षेत्रों में ज्ञान को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम गतिविधियों और कौशल विकास पहलों का अवलोकन प्रदान किया। जी.टी.ई. प्रभाग के प्रमुख एवं मुख्य वैज्ञानिक डॉ. कंवर सिंह ने भू-तकनीकी इंजीनियरिंग के क्षेत्र में

विविध गतिविधियों पर प्रकाश डाला। प्रारंभ में मुख्य वैज्ञानिक एवं परियोजना प्रमुख डॉ. पी.एस. प्रसाद ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के अधिदेश एवं पाठ्यक्रम संरचना की व्याख्या की तथा पाठ्यक्रम में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए मंत्रालय के उद्देश्यों के साथ इसे संरक्षित किया।

इस पांच दिवसीय पाठ्यक्रम में सुदृढ़ मृदा संरचना, फुटपाथ स्थिरीकरण, जल निकासी समाधान, तथा सड़क अवसंरचना परियोजनाओं में भू-सिंथेटिक्स के व्यावहारिक अनुप्रयोग जैसे विषयों को शामिल किया गया। कार्यक्रम में तकनीकी सत्र, व्यावहारिक प्रशिक्षण, तथा अग्रणी वैज्ञानिकों एवं उद्योग पेशेवरों द्वारा संचालित विशेषज्ञ चर्चाएँ थीं।

सीएसआईआर-आईएचबीटी द्वारा ई-ट्रैक्टर एवं ई-टिलर रोड शो का आयोजन



सीएसआईआर-हिमालयी जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-आईएचबीटी), पालमपुर ने सीएसआईआर-केंद्रीय यांत्रिक अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीएमईआरआई), दुर्गापुर द्वारा विकसित ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर का रोड शो और लाइव प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य हिमाचल प्रदेश में स्थायी कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा देना और कृषि प्रौद्योगिकी में नवीनतम प्रगति के बारे में किसानों के बीच जागरूकता पैदा करना था। इस रोड शो का उद्घाटन सीएसआईआर के हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. नवीन कुमार ने किया। उन्होंने कृषि मशीनीकरण को पर्यावरण संरक्षण के साथ एकीकृत करने में सीएसआईआर के प्रयासों की सराहना की और हिमाचल प्रदेश की छोटी जोतों के लिए उपयुक्त नवाचारों के महत्व



पर जोर दिया। कृषि उपनिदेशक डॉ. कुलदीप सिंह धीमान ने तकनीकी और इंजीनियरिंग प्रगति के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाने में सीएसआईआर प्रयोगशालाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इस तरह के

नवाचार आधुनिक कृषि के लिए महत्वपूर्ण हैं और किसानों को इन प्रौद्योगिकियों के लिए उपलब्ध सरकारी सब्सिडी के बारे में जानकारी दी। सीएसआईआर-सीएमईआरआई के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू ने संस्थान की शोध

पहलों और नए विकसित ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर की प्रमुख विशेषताओं के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ये मशीनें उपयोगकर्ता के अनुकूल हैं और इन्हें महिलाएं भी आसानी से चला सकती हैं। उन्होंने कार्यक्रम के आयोजन के लिए सीएसआईआर-आईएचबीटी को धन्यवाद भी दिया। इससे पहले, सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर के निदेशक डॉ. सुदेश कुमार यादव ने अतिथियों का स्वागत किया और पर्यावरण के अनुकूल मशीनीकरण समाधान विकसित करने के लिए सीएसआईआर-सीएमईआरआई की सराहना की। उन्होंने किसानों के कल्याण में सीएसआईआर-आईएचबीटी के योगदान पर भी प्रकाश डाला, विशेष रूप से सुगंध और फूलों की खेती के मिशनों के माध्यम से जो ग्रामीण आजीविका को बदल रहे हैं। इस कार्यक्रम में 150 से अधिक किसानों ने भाग लिया।

(फार्म IV)

सीएसआईआर समाचार के स्वामित्व और प्रकाशन से संबंधित सूचना प्रपत्र
(नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन का स्थान	नई दिल्ली
2. प्रकाशन की अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम व राष्ट्रीयता पता	श्री राजेश शर्मा , भारतीय मैसर्स चंदू प्रैस , 469, पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एस्टेट, दिल्ली-110092 द्वारा मुद्रित
4. प्रकाशक का नाम व राष्ट्रीयता पता	श्री मुकेश अंबादास पुंड , भारतीय सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान डॉ के. एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली 110 012
5. संपादक का नाम व राष्ट्रीयता पता	शुभदा कपिल , भारतीय सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान डॉ के. एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली 110 012
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो पत्रिका के स्वामी, साझेदार और शेयर होल्डर हों, जो कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हों।	वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) का प्रकाशन

मैं घोषणा करता हूँ कि उक्त विवरण मेरी जानकारी तथा विश्वास में सत्य है।

हस्ताक्षर

(श्री मुकेश अंबादास पुंड)

मार्च 2025

प्रकाशक